

# सुन्दर कौन है?

कैरन हेडॉक

**जब** तुम किसी युवती को देखते हो तो क्या सोचते हो कि वह सुन्दर है या नहीं? इसका फैसला कैसे करते हो? क्या यह बात सहसा ही मन में आ जाती है कि “वह कितनी सुन्दर है” या “वह बहुत बदसूरत है।” क्या सुन्दरता का तुम्हारा अहसास किसी अधिकारिक नज़रिए पर टिका होता है? या क्या यह जज़्बाती फैसला होता है? क्या पहले तुम कारणों पर विचार करते हो कि कोई व्यक्ति किस-किस तरह से सुन्दर हो सकता है? उसके पक्ष-विपक्ष में तर्क करते हो और फिर सोच-समझकर कोई फैसला करते हो? हो सकता है कि तुम चेतन स्तर पर कारणों पर विचार न करते हो मगर किसी को खूबसूरत या बदसूरत कहने के पीछे कुछ कारण तो रहते ही होंगे।

तुमने देखा होगा कि कई दफा तुम अपने दोस्तों से इस बात पर असहमत होते हो कि कौन ज़्यादा सुन्दर है और कौन कम। सुन्दरता को लेकर अलग-अलग लोगों के मत अलग-अलग होते हैं। कौन सुन्दर है इसे लेकर अलग-अलग समुदायों की भी अलग-अलग राय हो सकती है। और हमारा मन भी समय के साथ बदलता रह सकता है।

## सुन्दरता के बारे में हम राय क्यों कायम करते हैं?

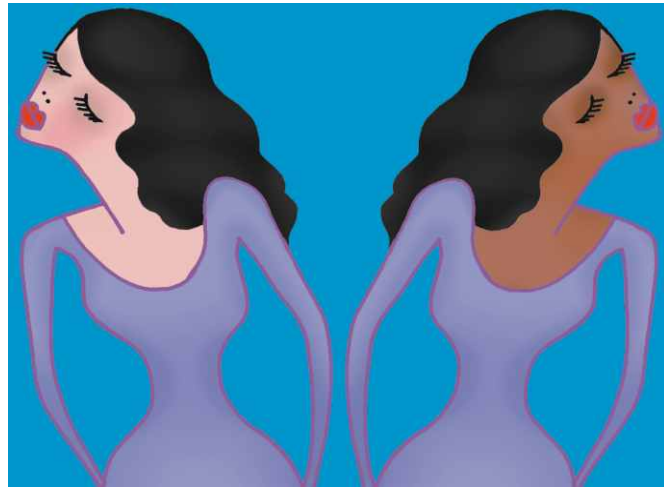
हम किसी स्त्री की सुन्दरता की परवाह ही क्यों करते हैं? एक सीधी-सी बात यह है कि किसी स्त्री की सुन्दरता के आधार पर यह तय होता है कि उसका जीवनसाथी कौन होगा। कोई भी स्त्री खुद को सुन्दर दर्शाने की कोशिश करती है ताकि वह पुरुषों को आकर्षक लगे यानी दुल्हन वही जो पिया मन भाए!

शादी के अलावा भी कई ऐसे अवसर हैं जो उन स्त्रियों को ज़्यादा आसानी से मिलते हैं जिन्हें खूबसूरत माना जाता है। जैसे हो सकता है कि वे स्कूल में ज़्यादा लोकप्रिय हों। क्या ऐसा भी हो सकता है कि इस कारण से उन्हें अंक भी ज़्यादा मिलें और नौकरी भी बढ़िया मिले? तुम सोचोगे कि सुन्दर स्त्रियाँ सबकी पसन्द होती हैं क्योंकि देखने में वे भली होती हैं। और यह तो सब मानेंगे ही कि सुन्दरता को देखकर सभी को खुशी मिलती ही है।

## हम सुन्दरता के बारे में राय कैसे बनाते हैं?

कौन तय करता है कि सुन्दरता क्या है? क्या हम सबके अपने-अपने विचार हैं कि क्या सुन्दर है – क्या ये विचार अपने परिवार, समुदाय या समाज से स्वतंत्र हैं। वास्तव में कोई भी अलग-थलग नहीं जीता। तो ज़ाहिर है हम पर इस बात का असर पड़ता है कि अन्य लोग सुन्दरता के बारे में क्या सोचते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम एक ऐसे समाज में

पले-बढ़े हैं जहाँ सबसे अमीर और शक्तिशाली लोगों की चमड़ी का रंग हल्का है, तो कोई अचरज नहीं होना चाहिए यदि हम चमड़ी के हल्के रंग को सुन्दर मानने लगे। और देखा जाए तो यह सोच गोरी चमड़ी वालों को शक्तिशाली बनाए रखने में मददगार ही होगी। यह नस्लवाद का एक पहलू है।



अलबत्ता हममें से जो लोग गोरे नहीं हैं और शक्तिशाली नहीं हैं, वे ज़रूर इस बात पर एतराज़ करेंगे। आज हम समझते हैं कि अवसरों को परिभाषित करने का यह तरीका दमनकारी और अन्यायपूर्ण है। हमें नहीं लगता कि सिर्फ चमड़ी के रंग के आधार पर लोगों को बेकार घोषित करना ठीक है। किसी व्यक्ति के अधिकार और अवसर उनकी चमड़ी के रंग पर निर्भर नहीं होने चाहिए।

लोगों की चमड़ी के रंग में बहुत विविधता होती है। चमड़ी का रंग एक ऐसी चीज़ है जो हमें जन्म से मिलता है। मगर इस पर पर्यावरण का भी असर रहता है – यदि हम ज़्यादा समय धूप में काम करें तो हमारा रंग गहरा हो जाता है। लिहाज़ा जो लोग बाहर धूप में काम नहीं करते, उनकी चमड़ी का रंग गोरा रहने की सम्भावना ज़्यादा होती है। बाहर के अधिकांश कामों के लिए कम वेतन मिलता है और ऐसे काम करने वालों की सामाजिक हैसियत भी कम होती है। यह एक और कारण है कि हम चमड़ी के गहरे रंग को कमतर मान बैठते हैं। कमतर के हमारे विचारों पर फिल्मों, टेलीविज़न और अन्य माध्यमों का भी असर पड़ता है। यदि कोई लड़की ऐसे माहौल में पली-बढ़ी हो जहाँ गोरी चमड़ीवाली खूबसूरत औरतों की छवियाँ आसपास फैली हों तो यह सम्भव नहीं होता कि वह यह सोचेगी कि काली चमड़ी सुन्दर है।

हम भी यह कोशिश करते हैं कि अपने शरीर और पोशाक में ऐसे परिवर्तन करें कि हम सुन्दर नज़र आएँ। कई बार तो हम खुद को सुन्दर बनाने के चक्कर में ऐसे-ऐसे काम करते हैं जिनसे हमें तकलीफ होती है। जैसे अक्सर महिलाएँ सुन्दर मगर तकलीफदेह जूते-चप्पल (खासतौर पर ऊँची एड़ी वाली) खरीद लेती हैं। सुन्दर जूते-चप्पल के बारे में हमारी सोच पर फिल्म, टेलीविज़न और विज्ञापनों का काफी असर



होता है। कम्पनियाँ जूते-चप्पल बनाती हैं मुनाफा कमाने के लिए। कई बार स्टाइल इस बात से तय होती है कि सबसे ज़्यादा मुनाफा किससे मिलेगा। इसलिए जूता कम्पनियों को कम ही चिन्ता होती है कि उनके बनाए जूते कितने दिन चलेंगे या कितने आरामदेह होंगे। कम्पनियाँ “सुन्दरता” को इस तरह परिभाषित करती हैं कि मुनाफा अधिक से अधिक हो। तब सुन्दरता भी एक वस्तु हो जाती है जिसे बेचा और खरीदा जा सकता है।

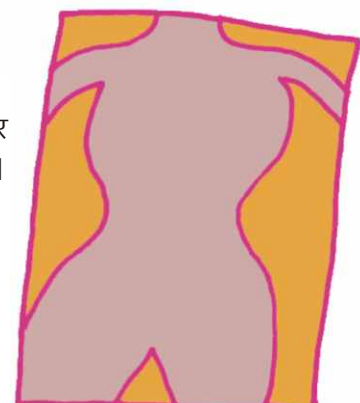
कम्पनियों ने फैशन और स्त्रीवत सुन्दरता को परिभाषित करने की कला में महारत हासिल कर ली है। इसी के तहत सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ होती हैं, फैशन शो होते हैं और स्त्रियों के शरीर की भौण्डी नुमाइश होती है। अश्लील साहित्य भी इसी का एक हिस्सा है।

सौन्दर्य प्रतियोगिताओं पर विचार करते हैं। सौन्दर्य प्रतियोगिताओं का मकसद क्या है? क्या यह कोई खेल है – मनोरंजन के लिए? और इसका उद्देश्य दुनिया की सबसे सुन्दर स्त्री को खोज निकालना है ताकि सभी उसकी सुन्दरता का लुत्फ उठा सकें। क्या इसका उद्देश्य यह है कि कुछ स्त्रियों को थोड़ी शोहरत और सम्पत्ति हासिल हो जाए?

यदि यह खेल है तो इतना तो कहा ही जा सकता है कि इसमें क्रिकेट और टेनिस जैसे खेलों का एक गुण मौजूद है – व्यापारीकरण। दरअसल सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ एक तरह के विज्ञापन हैं। ये इसमें पैसा लगाने वाली कम्पनियों को उत्पाद बेचने और मुनाफा कमा सकने में मदद करती हैं।

जिस तरह से फैशन शो का मकसद वस्त्रों की बिक्री करना है उसी तरह से सौन्दर्य प्रतियोगिताओं का मकसद सुन्दरता को बेचना है। सिर्फ लिपस्टिक, पोशाकें, परफ्यूम, साबुन, जूते-चप्पल, बालों के रंग ही नहीं बल्कि सुन्दरता के विचार को भी बेचना इनका मकसद है।

असल में सुन्दरता की हमारी धारणा समाज, संस्कृति, परम्पराओं और अपने निजी अनुभव से बनती है। अलग-अलग समुदायों में सुन्दरता की परिभाषा अलग-अलग हो सकती है। आज सुन्दरता को लेकर जो आम सहमति नज़र आती है उसका कारण यह है कि आज दुनिया का माहौल एक-सा होता जा रहा है। क्षेत्रीय संस्कृतियाँ गायब होती जा रही हैं। यह टी.वी. जैसे प्रचार माध्यमों की वजह से हो रहा है। हो सकता है कि कल तक किसी एक कबीले में बड़े-बड़े कूल्हों और चपटी नाक वाली स्त्रियों को सुन्दर माना जाता था मगर आज वही लोग उस स्त्री को तवज्जो देंगे जो लिपस्टिक

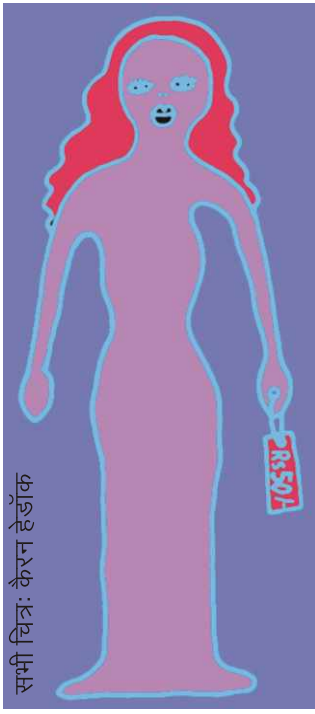


पोत ले, पाश्चात्य पोशाक पहने और कुपोषित की हद तक दुबली हो। क्यों? क्योंकि यह वह स्त्री है जो टी.वी. पर नज़र आती है। रईसी और शान शौकत के नाम के साथ।

देखा जाए तो अधिकांश स्त्रियाँ कभी “सुन्दर” बनने में कामयाब नहीं हो पाएँगी। सुन्दरता का अस्तित्व तभी है जब बदसूरती भी मौजूद हो। यानी सारी स्त्रियाँ एक जैसी सुन्दर हुईं तो सुन्दरता नाम की चीज़ ही नहीं बचेगी। स्त्रियों को एक खास तरह की सुन्दरता को हासिल करने के लिए उकसाया जाता है। चाहे वह कितना ही मुश्किल या असम्भव क्यों ना हो। इसमें कम्पनियों को लिपस्टिक, नेल पॉलिश, शैम्पू, परफ्यूम, अण्डरवियर और पोशाकें बेचकर खूब मुनाफा ज़रूर हो जाता है।

यदि कम से कम कपड़े पहने कोई स्त्री कार के साथ दिखाई दे जाए तो ज़्यादा सम्भावना होती है कि कोई रईस इस कार को खरीदने को लालायित होगा। व्यापारिक उद्देश्य से स्त्रियों के शरीर का उपयोग आजकल इतना आम हो गया है कि अक्सर यह “सामान्य” नज़र आता है और इसका विरोध नहीं होता है।





शारीरिक क तन्दुरुस्ती के प्रति सजगता को बढ़ावा देने की बजाय एक खास तरह की सुन्दरता पर ज़ोर देने का नतीजा शारीरिक व मानसिक कष्टों के रूप में सामने है – खासतौर पर उन लोगों में जिनके पास इतना ज़्यादा पैसा है कि वे अपनी ज़रूरत से ज़्यादा उपभोग करते हैं। “सही” शारीरिक आकार और बनावट हासिल करने में नाकामी

लगभग पक्की है लेकिन इस चक्कर में “डाइट्स” और व्यायाम की अन्तहीन कोशिशें शुरू हो जाती हैं। अक्सर ये कोशिशें नाकाम रहती हैं क्योंकि इनके साथ-साथ आलतू-फालतू खाने-पीने की अदम्य इच्छा बनी रहती है। अमरीका के डाइटिंग और व्यायाम तो बड़े-बड़े धन्धे बन गए हैं। दुनिया में कहीं और “मोटा ना होने” के प्रति इतनी जागरूकता नहीं है फिर भी अमरीका में मोटे लोगों, अनफिट लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसके साथ दमा और एलर्जी की वे तकलीफें भी शामिल हो जाती हैं जो मेकअप, त्वचा व बालों की प्रसाधन सामग्री और त्वचा का सही रंग हासिल करने के लिए सूर्य स्नान करने से पैदा होती हैं।

इससे भी ज़्यादा गम्भीर चीज़ वह मानसिक तनाव, अलगाव और अधूरेपन की भावना, अपराध बोध और शर्मिन्दगी का एहसास है जो तब पैदा होते हैं जब कोई स्त्री सुन्दरता के मानकों को प्राप्त नहीं कर पाती। लगभग हर स्त्री को किसी ना किसी मायने में अधूरेपन का एहसास कराया जाता है। यदि गलत आकार की नाक न हुई तो कहा जाएगा कि उसके होंठ बहुत मोटे हैं या बहुत पतले हैं। शायद उसके बाल बहुत घुँघराले या बहुत सीधे हैं या टाँगों पर बहुत बाल हैं या इसकी मसल्स बहुत ज़्यादा दिखाई देती होंगी या इसकी भुजाएँ बहुत पतली होंगी। यह तो जानी-मानी बात है कि एक उम्र के बाद किसी भी स्त्री की वह सुन्दरता जाती रहेगी, जो कभी रही होगी क्योंकि स्त्री-सौन्दर्य की सारी बातें तो जवान लड़कियों के मामले में ही होती हैं।

वैसे अधूरेपन का यह अहसास समाज के लिए उपयोगी भी हो सकता है। इससे यथास्थिति बनाए रखने में मदद मिलती है। यदि कोई स्त्री खुद को अधूरा-सा महसूस करती है तो इस बात की आशंका कम रहती है कि वह विद्रोह करेगी या समाज में बेहतर स्थिति की माँग करेगी। जब कोई स्त्री खुद को बदसूरत और मूल्यहीन मानेगी तो उसके लिए घरेलू कामों में ही लगे रहना आसान होगा। उसे यह महसूस होता रहेगा कि उसे अपने पति के बराबर या उच्च वर्ग की खूबसूरत पीली पड़ी ग्रहणियों के बराबर कमाने का या कम काम करने का या उतना स्वतंत्र रहने का कोई हक नहीं है।

कहने का मतलब यह नहीं है कि समाज में सुन्दरता नहीं होनी चाहिए। बेशक लोग स्त्रियों की सुन्दरता के विषय में फैसले करते रहेंगे। लेकिन हमें यह ज़रूर सोचना चाहिए कि ये फैसले हम क्यों कर रहे हैं? और हमें व्यावसायिक उद्देश्यों से बनाई गई सुन्दरता की एकमात्र परिभाषा का विरोध ज़रूर करना चाहिए। व्यापारिक लाभ के लिए स्त्री शरीर के शोषण का विरोध भी करना चाहिए क्योंकि यह इतनी सारी औरतों के मन और तन को चोट पहुँचाता है।

## 2010 अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष



सामान्य  
संस्कृत  
कालः  
इतिहास



पाइड फ्लाइकैचर

### शिकारी 2 - फ्लाइकैचर

कुछ फ्लाइकैचर बैठे-बैठे या ज़मीन पर चलते कीड़े खाते हैं। और कुछ कमाल के कलाबाज़ हैं। कलाबाज़ी हवा में गोता खाने की, मुड़ने-पलटने की। वो भी पलक झपकते ही। फुर्ती से। अगर हवा में उड़ते कीड़े पकड़ने हैं तो गोताखोरी, गुलाटियाँ लगाने का हुनर बेहद ज़रूरी है। छोटे-छोटे कीड़े इतने फुर्तीले-लचीले होते हैं कि उन्हें गड़प करने के लिए पक्षियों को भी वैसी ही फुर्ती दिखानी पड़ती है। वैसे इस काम में इनकी तेज़ नज़र भी मदद करती है। पक्षियों को तो भोजन मिला ही इससे कीड़ों की संख्या भी काबू में बनी रहती है।

